उड़े जब जब जुल्फें तेरी... रेशमी सलवार कुर्ता जाली का..!

डा विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

दोस्तों, क्या आप यकीन करेंगे हिंदी फ़िल्मी जगत में एक ऐसे संगीतकार भी हुए हैं जिन्होंने अपने पूरे कैरियर में अपनी समकालीन स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर से एक भी गीत नहीं गवाया इसके बावजूद उन्होंने अत्यंत लोकप्रिय एक से बढ़ कर एक सुपरहिट गीत फ़िल्म संसार को दिए. जी हाँ हम बात कर रहे हैं संगीतकार ओमकार प्रसाद नैयर की जिन्हें हम सब ओ पी नैयर के नाम से जानते हैं , वे भारतीय फिल्म उद्योग के एक ऐसे दिग्गज संगीतकार थे जिन्होंने अपनी विशिष्ट शैली से हिंदी फ़िल्मी संगीत को एक अलग पहचान दी.

ओ. पी. नैयर के अंदर संगीत का बीज बचपन में ही अंकुरित हो गया था. किसी औपचारिक शिक्षा के बिना भी वे बड़ी सहजता से उत्कृष्ट धुनों की रचना कर लेते थे. उन्होंने 'कनीज' फिल्म से अपने करियर की शुरुआत की और जल्द ही 'सीआईडी', 'तुमसा नहीं देखा', और 'नया दौर' जैसी हिट फिल्मों के जरिए फ़िल्मी संगीत की दुनिया में छा गए. उन्हें भारतीय संगीत के के साथ साथ पश्चिमी संगीत में भी महारत हासिल थी.

वह एक लाख रुपये प्रति फिल्म चार्ज करने वाले पहले संगीतकारों में से एक थे. उनका रहन-सहन राजसी था. वो अपने अक्खड़ स्वभाव के लिये मशहूर थे, अपने काम में समय के बड़े पाबंद थे एक बार मोहम्मद रफी एक घंटे देर से रिकॉर्डिंग पर पहुंचे, तो नैयर ने उनसे तीन साल तक बात नहीं की और उनकी बजाय महेन्द्र कपूर से गाने गवाना शुरू कर दिया . हालांकि बाद में दोनों की दोस्ती ने कई 'ब्लॉकबस्टर' गाने दिए.

बिंदास, बेबाक और अपनी शर्तों पर जीने वाले, ओ. पी. नैयर उतने ही दिलचस्प इंसान थे जितने बेहतरीन संगीतकार. वे शानो-शौकत में जीते थे और अपने निर्णयों पर अडिग रहते थे.बड़े फिल्मकारों के सामने भी अपने सिद्धांत नहीं बदलते थे. एक बार एक निर्माता ने उनसे कहा कि आपकी बनाई धुन फ़िल्म के हीरो को पसंद नहीं आ रही इसलिए इसे बदल दीजिये, नैयर साहब ने कहा कि आप फ़ौरन हीरो बदल लीजिये क्योंकि धुन बदलने का तो सवाल ही नहीं है.

नैयर ने लता की आवाज को अपनी धुनों के लिए 'अनुपयुक्त' माना, लेकिन आशा भोंसले के साथ उनकी जोड़ी सुपर हिट रही. उन्होंने लता मंगेशकर के साथ कभी काम नहीं किया, फिर भी उनके गीत सुपरहिट रहे, यह उनकी प्रतिभा का प्रमाण है. आशा भोंसले को तराशने एवं शीर्ष पर पहुँचाने में नैयर के संगीत का बहुत बड़ा हाथ है.

ओ. पी. नैयर की धुनें सुनते ही पहचान में आती हैं. उनकी संगीत शैली की कुछ बड़ी विशेषताएँ हैं उनके संगीत में दादरा, कहरवा और पंजाबी ठेकों और लोकधुनो विशेषकर भाँगड़ा का जितना उपयोग उन्होंने किया है और क़ोई संगीतकार नहीं कर पाया है, उनके संगीत में तबले और ढोलक के साथ साथ वेस्टर्न वाद्यों सैक्सोफोन, ड्रम, बोंगो, वायलिन, प्यानो और गिटार का बहुत खूबसूरत इस्तेमाल हुआ है. इसी प्रकार तांगे की आवाज़ और घोड़ों के टापों का भी संगीत में अद्भुत प्रयोग ओ पी नैयर ने किया है.

1950 और 60 का दशक ओ. पी. नैयर का स्वर्णकाल माना जाता है. इस दौरान उन्होंने लगातार हिट संगीत दिया. उनकी कुछ अन्य प्रमुख फिल्में हावड़ा ब्रिज, आरपार, मिस्टर एंड मिसेज़ 55, बहारें फिर भी आएंगी, फागुन, कैदी, दो उस्ताद, कश्मीर की कली, हमसाया, एक मुसाफिर एक हसीना,कल्पना, सावन की घटा, दिल और मोहब्बत, सम्बन्ध आदि हैं.

उनके प्रसिद्ध गीतों में 'कभी आर कभी पार' (आरपार), 'रेशमी सलवार कुरता जाली का' (नया दौर), 'उड़े जब जब जुल्फें तेरी' (नया दौर), 'ये देश है वीर जवानों का (नया दौर), 'जाईये आप कहां जाएंगे' (एक मुसाफिर एक हसीना), इशारों इशारों में दिल लेने वाले' (कश्मीर की कली), मेरा नाम चिन-चिन चू' और 'आइए मेहरबान '(हावड़ा ब्रिज), 'दिल की आवाज़ भी सुन मेरे फ़साने पे न जा '(हमसाया), 'इक परदेसी मेरा दिल ले गया' (फागुन)', 'यूँ तो हमने लाख हँसी देखे हैं' (तुमसा नहीं देखा), 'हाथ आया है जबसे तेरा हाथ में, आ गया है नया रंग जज़्बात में '(दिल और मोहब्बत), 'चैन से हमको कभी आपने जीने न दिया' (प्राण जाये पर वचन ना जाये), 'चल अकेला चल अकेला' (सम्बन्ध) आदि हैं.

उन्होंने फिल्मों के लिये कुछ सदाबहार कॉमेडी गीत भी तैयार किये जैसे 'मैं बम्बई का बाबू ' (नया दौर), 'ऐ दिल है मुश्किल जीना यहाँ ' (सीआईडी), 'जाने कहाँ मेरा जिगर गया जी '(मिस्टर एंड मिसेज़ 55) आदि.

इन गीतों ने न केवल फिल्मों को हिट बनाया, बल्कि उस दौर के संगीत को भी एक नई ऊर्जा से भर दिया. उनकी फिल्मों के गीतकार मुख्यत: साहिर लुधियानवी और मजरूह सुल्तानपुरी थे इनके अलावा उन्होंने कमर जलालाबादी, एस एच बिहारी, शेवन रिजवी और राजा मेहदी अली खां आदि के साथ भी बेहतरीन काम किया. आपको जानकर हैरानी होगी कि नैयर साहब ने कुछ गीत खुद भी लिखे परंतु गीतकार के तौर पर अपनी पत्नी सरोज का नाम दिया जैसे गीत 'प्रीतम आन मिलो दु:खिया जिया बुलाये' (मिस्टर एंड मिसेज़ 55) और सी एच आत्मा का गाया एक गैर फ़िल्मी गीत 'कौन नगर तेरा दूर ठिकाना' दोनों नैयर साहब के लिखे हुए गीत हैं.

अस्सी के दशक में उनकी लोकप्रियता कम हो गई और वे परिदृश्य से लगभग गायब हो गये लेकिन 1992 की फ़िल्में 'मंगनी' और 'निश्चय' और 1994 की फ़िल्म 'जिद' में उन्होंने शानदार संगीत देकर सिद्ध कर दिया कि वो ख़तम नहीं हुए .वे संगीतकार के साथ साथ होम्योपैथिक डॉक्टर भी थे

आज भी ओ. पी. नैयर का संगीत हिंदी फिल्मों के स्वर्णिम काल का प्रतीक है और लोग उसके दीवाने हैं. उनकी बनाई धुनें शोखी, ऊर्जा और भारतीयता की ऐसी मिसाल हैं जिनकी चमक आने वाली कई पीढ़ियों तक बरकरार रहेगी. उनके गीत आज भी उतने ही मधुर और ताज़ा हैं जितने गुज़रे दौर में थे. आज के लिये इतना ही, अगले सप्ताह फिर मुलाक़ात होगी तब तक के लिये नमस्कार.

ग्लो

शूटिंग से ब्रेक लेकर लॉस एंजिल्स पहुंचीं प्रियंका

बल आइकॉन प्रियंका चोपड़ा अपनी फिल्मों, प्रोजेक्ट्स और पर्सनल लाइफ को लेकर अक्सर चर्चा में रहती हैं. पिछले कुछ हफ्तों से वह हैदराबाद में एसएस राजामौली की मेगा बजट फिल्म 'वाराणसी' की शूटिंग कर रही थीं. भारत में शूटिंग की व्यस्तताओं के बाद अब प्रियंका अपने लॉस एंजिल्स वाले घर लौट आई हैं, जहां वह पति निक जोनस और बेटी मालती मैरी के साथ रहती हैं.घर पहुंचते ही प्रियंका ने अपने फैंस के लिए एक प्यारी सी सेल्फी शेयर की. इस फोटो में वह अपने घर की छत पर खड़ी नजर आ रही हैं.

प्रियंका ने कैजुअल व्हाइट टॉप पहना है और चेहरे पर हल्की मुस्कान है. वह कैमरे की ओर देखते हुए हाथ से 'ङ्क' यानी 'विक्ट्री' का साइन बना रही हैं. इस तस्वीर के साथ प्रियंका ने सिर्फ एक शब्द लिखा कि होम और इसके साथ रेड हार्ट इमोजी जोड़ा.प्रियंका की यह सेल्फी कुछ ही मिनटों में सोशल मीडिया पर वायरल होने लगी. फैंस ने उनके कमेंट सेक्शन में वेलकम होम क्वीन, 'सबसे प्यारी क्वीन', ग्लो इज अनरियल जैसे कमेंट्स की बौछार कर दी.

लंबे समय बाद प्रियंका को इतने रिलैक्स अंदाज में देखकर उनके फॉलोअर्स बेहद खुश नजर आए. एक्ट्रेस सिर्फ एक्टिंग तक सीमित नहीं हैं, प्रियंका ने इस प्रोजेक्ट के बारे में कहा कि वह खुद भारत और अमेरिका दो संस्कृतियों के बीच पली-बढ़ी हैं, इसलिए सैश की पहचान की खोज उनसे काफी जुड़ती है. उन्होंने इसे अपने दिल के बेहद करीब बताया.

बॉ

आमिर खान को मिला आरके लक्ष्मण अवॉर्ड

लीवुड के मिस्टर परफेक्शनिस्ट आमिर खान पहले ऐसे अभिनेता बन गए हैं जिन्हें आरके लक्ष्मण अवॉर्ड फॉर एक्सीलेंस मिला है.

आमिर खान भारत के सबसे बड़े सुपरस्टार्स में से एक हैं. उनकी जबरदस्त एक्टिंग ने कई कल्ट फिल्म दी हैं, और उन्होंने लगातार मनोरंजन की दुनिया में ऐसा योगदान दिया है जिसने इंडस्ट्री को एक नई दिशा दी है. उनकी इसी बेहतरीन सफलता और काम के सम्मान में, आमिर खान को पहला आरके लक्ष्मण अवॉर्ड फॉर एक्सीलेंस से सम्मानित किया गया है.

आमिर खान पहले ऐसे अभिनेता बन गए हैं जिन्हें आरके लक्ष्मण अवॉर्ड फॉर एक्सीलेंस मिला है. यह सम्मान मशहूर कार्टूनिस्ट आरके लक्ष्मण को समर्पित है, जिसे उनके परिवार ने शुरू किया है. इस खास सम्मान को आमिर खान ने बोमन ईरानी के हाथों हासिल किया. ऐसे में इस ग्रैंड अवॉर्ड नाइट की झलकियां शेयर करते हुए मेकर्स ने लिखा,एक दिग्गज को सबसे यादगार तरीके से सम्मानित करते हुए, आमिर खान ने बोमन ईरानी के हाथों पहला आर.के. लक्ष्मण एक्सिलेंस अवॉर्ड हासिल किया, और हज़ारों लोगों ने इस खास पल को देखा.

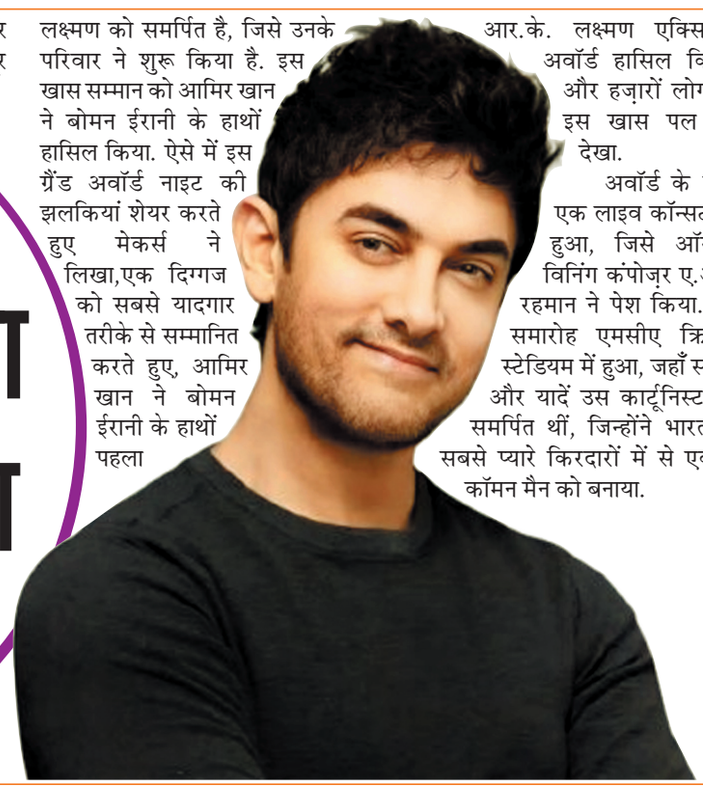

अवॉर्ड के साथ एक लाइव कॉन्सर्ट भी हुआ, जिसे ऑस्कर विनिंग कंपोज़र ए.आर. रहमान ने पेश किया. यह समारोह एमसीए क्रिकेट स्टेडियम में हुआ, जहाँ संगीत और यादें उस कार्टूनिस्ट को समर्पित थीं, जिन्होंने भारत के सबसे प्यारे किरदारों में से एक द कॉमन मैन को बनाया.

29 नवंबर को 'वेट्टैयन' का वर्ल्ड टेलीविज़न प्रीमियर होगा

दक्षिण भारतीय सिनेमा के सुपरस्टार रजनीकांत और मेगास्टार अमिताभ बच्चन की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'वेट्टैयन' का वर्ल्ड टेलीविज़न प्रीमियर इसी शनिवार, 29 नवंबर को रात आठ बजे ज़ी सिनेमा पर प्रसारित किया जाएगा. ज़ी सिनेमा ने घोषणा की है कि दर्शकों की भारी मांग को देखते हुए यह फिल्म पहली बार छोटे पर्दे पर शानदार अंदाज़ में प्रस्तुत की जाएगी. वेट्टैयन की खासियत यह है कि इसमें दो दिग्गज सितारे रजनीकांत और अमिताभ बच्चन पूरे 33 वर्ष बाद एक बार फिर साथ दिखाई दे रहे हैं. इस ऐतिहासिक मेल के कारण ही फिल्म को थिएटर रिलीज़ के दौरान जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली थी और अब इसके टेलीविज़न प्रीमियर को लेकर दर्शकों में उत्साह देखा जा रहा है.

फिल्म की कहानी अथियन नामक एक एन्काउंटर स्पेशलिस्ट के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसकी दुनिया तब बिखरने लगती है जब उसे यह अहसास होता है कि एक शिक्षक की हत्या की जांच में उसने जल्दबाज़ी में शायद एक निर्दोष व्यक्ति की जान ले ली. पछतावा उसे भीतर से तोड़ देता है और वह केस को दोबारा खोलने का निर्णय लेता है. यह जांच उसे पुलिस तंत्र, राजनीति और व्यवस्था में फैले भ्रष्टाचार के ऐसे अंधेरे गलियारों तक ले जाती है, जहां छिपे हुए इरादे और दबी हुई सच्चाइयाँ सामने आने लगती हैं. निर्देशक टी. जे. ग्नानावेल द्वारा निर्देशित इस फिल्म में फहाद फ़ाज़िल, राणा दग्गुबती, मंजू वारियर, ऋतिका सिंह और दुषारा विजयन जैसे कलाकार भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में नज़र आते हैं.

फातिमा ने बताये अपने बचपन के दिलचस्प किस्से

बॉलीवुड एक्ट्रेस और दंगल फेम फातिमा सना शेख इन दिनों अपनी रोमांटिक ड्रामा फिल्म गुस्ताख इश्क की तैयारी और प्रमोशन में व्यस्त हैं. फिल्म को लेकर लगातार चर्चा बढ़ रही है. दर्शक फातिमा और विजय वर्मा की ताज़ा जोड़ी को लेकर काफी उत्साहित हैं. लेकिन इसी बीच फातिमा ने अपनी पर्सनल लाइफ का एक दिलचस्प किस्सा साझा किया है, जिसने उनके फैंस को मुस्कुराने पर मजबूर कर दिया.

हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में फातिमा ने अपने बचपन के पहले क्रश के बारे में खुलकर बात की. उन्होंने बताया कि स्कूल के दिनों में उनका क्रश किसी क्लासमेट या पड़ोसी पर नहीं, बल्कि अपने मैथ्स टीचर पर था. बेल बजने के बाद टीचर के आने का इंतजार, उनकी डांट तक का खुशी से स्वागत फातिमा ने अपने इसी मासूम बचपन के अनुभव को बेहद चुलबुले अंदाज़ में याद किया. मज़ाकिया अंदाज में उन्होंने कहा 'जब सर डांटते थे तो हम खुशी से डांट खाते थे. हम कहते थे- हाँ सर, डांटो चलेगा, वापस समझाओ न. हमें कुछ समझ ही नहीं आता था.' फातिमा की यह मासूम स्वीकारोक्ति सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है, और उनके फैंस उनकी इस भोली याद पर खूब प्यार जता रहे हैं. फिल्म की बात करें तो गुस्ताख इश्क 28 नवंबर को रिलीज होगी. निर्देशक विभु पुरी की इस फिल्म में विजय वर्मा, नसीरुद्दीन शाह और शारिब हाशमी प्रमुख भूमिकाओं में हैं. यह फातिमा और विजय की पहली कोलैबोरेशन है, जिसे लेकर दर्शकों में खासा उत्साह है. स्टेज 5 प्रोडक्शन के तहत मशहूर डिजाइनर मनीष मल्होत्रा इस फिल्म को प्रोड्यूस कर रहे हैं.

बंगाली जासूस 'एकेन बाबू' अब हिंदी दर्शकों के लिए

आठ सफल वेब सीज़न और तीन हिट फिल्मों के बाद लोकप्रिय बंगाली जासूस एकेन बाबू अब टेलीविजन पर अपना आगाज़ करने जा रहे हैं, वो भी सोनी सब पर. लंबे समय से दर्शकों का पसंदीदा रहा ये सराहनीय होईचोई सीरीज़ अब हिंदी में डब होकर और भी बड़े दर्शक वर्ग तक पहुंचेगा

इस शो के केंद्र में हैं खाने के बेहद शौकीन और दिलचस्प अंदाज़ वाले जासूस एकेन बाबू, जिन्हें मशहूर अभिनेता अनिर्बान चक्रबर्ती ने निभाया है. उन्होंने अपने

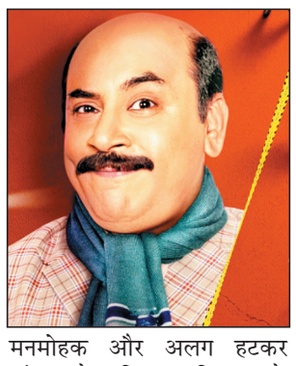

मनमोहक और अलग हटकर अंदाज़ के जरिए इस किरदार के लिए दर्शकों की खूब सराहना हासिल की है. आम क्राइम ड्रामा से बिल्कुल अलग, यह शो जासूसी कहानियों को हल्के-फुल्के और मज़ेदार अंदाज़ में पेश करता है. जहाँ आम तौर पर जासूसों को तेज-तर्रार और स्टाइलिश दिखाया जाता है, वहीं एकेन बाबू की सादगी, अनपेक्षित अंदाज़ और रोज़मर्रा का ह्यूमर उन्हें तुरंत ही दर्शकों का चहेता बना देता है. हर एपिसोड में रहस्य, हास्य और अनोखी अदाएँ मिल कर ये साबित करती हैं कि एक आम इंसान भी असाधारण रहस्यों को सुलझा सकता है.

सायंतनी घोष ने बताए अपने अनुभव

ज़ी टीवी के नए शो जगद्धात्री ने बहुत ही कम समय में दर्शकों के दिलों में अपनी जगह बना ली है. इसकी कहानी बांधे रखती है और इसमें जज़्बातों की गहराई भी है. कहानी के केंद्र में हैं सोनाक्षी बत्रा, जो जगद्धात्री का किरदार निभा रही हैं एक ऐसी लड़की जिसे घर में अक्सर नज़रअंदाज़ किया जाता है, लेकिन बाहर वो एक निडर अंडरकवर एजेंट है. उसकी दोहरी ज़िंदगी और उसका हौसला कहानी को लगातार असरदार बनाए रखते हैं. वहीं शिवाय के रोल में फरमान हैदर कहानी में और गहराई और रहस्य लेकर आते हैं. दोनों मिलकर इस कहानी को मजबूत और दिलचस्प बनाते हैं जिसमें केमिस्ट्री भी है और जज़्बात भी. सायंतनी घोष माया देशमुख की भूमिका में शो को एक जज़्बाती गहराई देती हैं. वो एक दमदार मीडिया शख्सियत और अपने बच्चे से बेइंतहा प्यार करने वाली मां हैं. गुंजन के साथ उनकी खूबसूरत बॉन्डिंग शो में एक प्यारा आकर्षण जोड़ती है. गुंजन की भूमिका निभा रहीं परी भानुशाली की मासूमियत हर सीन को बेहद सहज और प्यारा बना देती है. सायंतनी बताती हैं कि परी की यह सादगी और नैचुरल अंदाज़ मां-बेटी की इस कहानी को और भी खास बना देता है. एक बच्चे के साथ काम करने के अपने अनुभव पर सायंतनी दिल से जुड़े एहसास साझा करती हैं. वे कहती हैं, मैं बच्चों से बहुत जल्दी जुड़ जाती हूं और मेरे घर पर भी सब यह जानते हैं. बच्चे मुझसे फौरन घुलमिल जाते हैं. मैं असल ज़िंदगी में गॉडमदर हूं, तो मेरे आस-पास हमेशा मेरे भांजे-भांजियां रहते हैं. इसलिए बच्चों के साथ काम करना मेरे लिए बिल्कुल आसान है, यह मेरे लिए नैचुरल है.

मॉडर्न मॉम्स, जो रोजमर्रा की जिंदगी में घोल रही हैं मिठास!

टीवी पर मां और सास के किरदारों को अक्सर इमोशनल, परेशान या यादा नाटकीय अंदाज में दिखाया जाता रहा है. लेकिन एण्डटीवी की लोकप्रिय अभिनेत्रियाँ इस पुराने ढर्रे को तोड़ते हुए अपने हल्के-फुल्के, व्यावहारिक और दिल को छू लेने वाले किरदारों से दर्शकों का दिल जीत रही हैं. घरवाली-पेड़वाली की रीता (ऋचा सोनी), हप्पू की उलटन पलटन की कटोरी अम्मा (हिमानी शिवपुरी) और भाबीजी घर पर हैं की अम्मा जी (सोमा राठौड़) बता रही हैं कि दर्शक उनके किरदारों से इतना जुड़ाव क्यों महसूस कर रहे हैं. ऋचा सोनी, जो घरवाली-पेड़वाली में जीतू की मां रीता का किरदार निभा रही हैं, कहती हैं, रीता बिल्कुल अलग तरह की मां है. वो गंभीर या यादा भावुक नहीं, बल्कि मॉडर्न, स्टाइलिश और मज़ेदार है. घर में वह हमेशा पॉज़िटिव एनर्जी लाती है और माहौल हल्का-फुल्का रखती है. हिमानी शिवपुरी, जिन्हें दर्शक हप्पू की उलटन पलटन की कटोरी अम्मा के रूप में जानते हैं, बताती हैं, कटोरी अम्मा उन इमोशनल मांओं जैसी नहीं है जिन्हें हम टीवी पर देखते आए हैं. वह मज़बूत, चतुर और हमेशा सतर्क रहती है. घबराने के बजाय हालात को संभालती है, सोमा राठौड़, जो भाबीजी घर पर हैं में अम्मा जी (रामकली) बनी हैं, कहती हैं, अम्मा जी आम सख्त या भावुक सास जैसी नहीं हैं. उनके भीतर अपनापन है और दिल बड़ा है. वह अपनी बहू के साथ न्याय करती हैं और कई बार बेटे से यादा बहू का साथ देती हैं, क्योंकि उनके लिए ईमानदारी सबसे ज़रूरी है.

रामायण में विश्वस्तरीय वीएफएक्स : नितेश

फिल्म निर्देशक नितेश तिवारी ने कहा है कि उनकी आगामी फ़िल्म रामायण में दृश्यों को भव्य और शानदार बनाने के लिए विश्व-स्तरीय वीएफएक्स का प्रयोग किया जा रहा है.

श्री तिवारी ने वेव्स फिल्म बाज़ार में बोलते हुए कहा कि पौराणिक महाकाव्य का पैमाना ऐसी मांग करता है कि यह दृश्य के स्तर पर इतना आश्चर्यजनक हो कि यह पूरी दुनिया के लिए एक मानक बन जाए. उन्होंने इस फिल्म के निर्माण की पांच साल की यात्रा को साझा करते हुए कहा कि परियोजना की विशालता को पूरी तरह से समझने में ही उन्हें लगभग दो साल लग गए. उन्होंने कहा कि यह यात्रा डरावनी और दिमाग सुन्न करने वाली है. उन्होंने बताया कि रामायण के पहले भाग के रिलीज़ होने में अभी भी एक साल बाकी है.

फिल्म बाजार के पैनल में उनके साथ फ़िल्म निर्माता प्रशांत वर्मा और अश्विन कुमार भी शामिल थे. पैनल का संचालन ग्रीन गोल्ड एनिमेशन के राजीव चिलका कर रहे थे. पैनल ने इसपर व्यापक चर्चा की कि कैसे प्रौद्योगिकी भारतीय सिनेमा को नया रूप दे रही है. भारत के तेजी से विस्तार हो रहे वीएफएक्स परिदृश्य में इन निर्देशकों ने देश की बढ़ती रचनात्मक शक्ति और फ़िल्म, स्ट्रीमिंग और एनिमेशन में उच्च-गुणवत्ता वाले विज़ुअल इफ़ेक्ट्स की बढ़ती मांग के बारे में बात की.

तेलुगु में सुपरहिट सुपरहीरो फिल्म हनुमान बनाने वाले श्री वर्मा ने जोर देकर कहा कि प्रौद्योगिकी नहीं, बल्कि कहानी ही किसी भी फ़िल्म की नींव बनी रहती है. उन्होंने कहा, फ़िल्में कहानियों के कारण काम करती हैं. वीएफएक्स सहित अन्य सभी शिल्प, उस कहानी को भव्य तरीके से बताने में मदद करते हैं. श्री वर्मा ने अपनी व्यावहारिक कार्यप्रणाली को समझाते हुए कहा, या तो आप कलाकार को बहुत समय दें या आपके पास बहुत पैसा हो... हमारे पास पैसा नहीं था,

अंशुमन और देवाशीष एक हुए एकजुट

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहे गए फिल्मकार देवाशीष मखीजा और प्रशंसित अभिनेता अंशुमन झा क्राइम थ्रिलर के लिए आधिकारिक तौर पर साथ आ रहे हैं.

जोरम, भोंसले और अजी जैसी वैश्विक स्तर पर पहचानी जाने वाली फिल्मों के निर्देशक देवाशीष मखीजा इस बार एक दमदार जॉनर लेकर आ रहे हैं, जो जॉनर, किरदार और नैतिक तनाव की सीमाओं को आगे बढ़ाती है.

अभिनेता, निर्माता और स्वतंत्र सिनेमा के क्षेत्र में अपनी अनूठी पहचान बनाने वाले अंशुमन झा,जिनकी हालिया फिल्म लॉर्ड कर्ज़न की हवेली को विशेष सराहना मिली ,को इस फिल्म के लीड रोल के लिए चुना गया है.

लव सेक्स और धोखा, चौरंगा, लक्कड़बग्घा और नो फादर्स इन कश्मीर जैसी फिल्मों में अपनी बहुमुखी प्रतिभा दिखाने वाले अंशुमन एक ऐसे किरदार में नज़र आएंगे जो उनके लिए बिल्कुल नया है.जटिल, पर मखीजा की यथार्थवादी और नोयर दुनिया में पूरी तरह फिट.

देवाशीष मखीजा ने कहा, मैं चाहता हूँ कि यह फिल्म वह हो, जिससे लोग मुझे मेरी मौत के बाद भी याद रखें. मैं वर्षों से अंशुमन की यात्रा को देख रहा हूँ. उनमें एक स्थिरता और तीव्रता है, जो दुर्लभ है और इस फिल्म के लिए बिल्कुल सही है. यह किरदार संयम, उथल-पुथल, नाज़ुकता और शक्ति.